International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 294-296

अटल बिहारी वाजपेयी का विश्व समुदाय के प्रति दृष्टिकोण

वासुदेव*

सार

अटल बिहारी वाजपेयी जी का दृष्टिकोण विश्व समुदाय के प्रति सदैव मानवतावादी रहा। अटल जी एक व्यक्ति होकर भी, एक विचार के प्रतिक हैं। एक उदार विचार, एक व्यापक विचार, सबको साथ लेकर चलने वाला विचार, राष्ट्रीयता की पहचान कर संसार के समक्ष पूरे सम्मान के साथ देश को खड़ा करने का विचार है। राष्ट्र को शक्तिशाली और शीलवान बनाने का संकल्प लेने वाला विचार है। अटल जी गांधीवादी समाजवाद की अपनी अवधारणा पर जिस प्रकार अटल रहे, वह भी भारत की राजनैतिक इतिहास की एक कड़ी बन चुकी है। अटल जी ने अपने अन्तरराष्ट्रीय भाषणों में सम्पूर्ण मानव कल्याण का नारा बुलन्द किया तथा विश्व शान्ति का संरक्षण तथा मानव अधिकारों के संरक्षण की बात उन्होंने पूरे जोर शोर से उठाई। अटल जी का विश्व समुदाय के प्रति दृष्टिकोण नैतिक मानवीय मूल्यों के गुणों से ओतप्रोत था। अटल जी ने श्री लाल बहादुर शास्त्री के नारे–'जय जवान–जय किसान' के साथ 'जय विज्ञान' का नारा जोड़कर यह स्पष्ट कर दिया कि हमें वैज्ञानिक प्रगति के पथ पर दुनिया के साथ आगे बढना है। आतंकवाद का भी उन्होंने पूरजोर तरीके से विरोध किया तथा कहा कि आतंकवाद अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए भारी खतरा है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए समग्र विश्व को यह स्पष्ट सन्देश भी दिया कि भारत शांति और विकास के लिए सभी मंचो पर सहयोग करेगा। साथ ही उन्होंने अपने भाषणों में आधुनिक विज्ञान और प्रोद्योगिकी के प्रयोग के माध्यम से एक बेहत्तर विश्व की पूरजोर वकालत की और वैश्विक समुदाय से स्वतंत्रता और न्याय पर आधारित सार्वभौमिक शान्ति हेतु अपील की।।

शब्दकोशः *अटल बिहारी वाजपेयी, विश्व समुदाय, दृष्टिकोण, गुटनिरपेक्षता, संयुक्त राष्ट्र संघ, आतंकवाद।*

प्रस्तावना

मानव जीवन को इस धरती पर विशिष्ट और अन्य जीवनों में सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। मानवतावादी दृष्टि मनुष्य की विशिष्टता और श्रेष्ठता को खोज कर उन्हें विकसित करने का मार्ग प्रस्तुत करती है।

"स्वस्तिर्मानुषेम्यः।
ऊर्ध्व जिगातु भेषजम्।
शं नो अस्तु द्विपदे।
शं चतुष्पदे ।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।" [1]

अटल बिहारी वाजपेयी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ की 53 वीं महासभा में प्रधानमंत्री के रूप में 24 सितम्बर 1998 को न्यूयार्क में दिये भाषण को ऋग्वेद के इस श्लोक के साथ समाप्त किया जिसका भावार्थ है सभी मनुष्य समृद्ध हों, सभी वनस्पतियाँ और जीव–जन्तु जो सभी प्राणियों के जीवन का आधार हे, फले–फूलें, सभी मनुष्यों में सद्भावना हो, सभी पशुओं में परस्पर प्रेम हो, हर तरफ शान्ति, शान्ति और शान्ति ही रहे।

* शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी जी के द्वारा बोला गया यह श्लोक उनके विश्व समुदाय के लिए मंगलकामना की भावना को दर्शाता है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में जहाँ एक ओर राजग सरकार ने देश के विकास में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कीं वहीं दूसरी ओर अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में भी देश का गौरव बढाया।

अटल बिहारी वाजपेयी के विश्व समुदाय के प्रति दृष्टिकोण को हम निम्न बिन्दुओं के माध्यम से जान सकते हैं–

परमाणु परीक्षण

"11 और 13 मई 1998 के परमाणु परीक्षणों से जहाँ एक ओर देश का गौरव बढ़ा और भारत विश्व में परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों की श्रेणी शामिल हुआ वहीं दूसरी ओर उसे अमेरिका और उसके सहयोगी देशों के प्रतिबन्धों का सामना भी करना पड़ा।"[2] परन्तु अटल सरकार ने प्रतिबन्धों का बड़ी दृढता के साथ सामना किया और अन्ततः विश्व समुदाय को यह समझाने सफल हुआ कि भारत अपनी राष्ट्रीय अनिवार्यताओं और सुरक्षा संबंधी जिम्मेदारियों को समझते हुए अन्तरराष्ट्रीय समुदाय के साथ निरन्तर सहयोग करने का इच्छुक है। उसकी यह परमाणु शक्ति किसी भी देश के विरूद्ध आक्रमण के रूप में पहले इस्तेमाल नही होगी और परमाणु परीक्षण न करने की अपनी वचनबद्धता दोहराई।

गुटनिरपेक्षता एवं शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की विदेश नीति

अटल जी का मानना था कि "भारत की गुटनिरपेक्षता और शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व की विदेश नीति बहु–ध्रुवीय विश्व के लिए प्रासंगिक है। यह हमारे अत्यावश्यक हितों की सुरक्षा और आदर्शों को प्रोत्साहित करने वाले सिद्धान्तों पर आधारित है।" साथ ही उन्होंने अपने पड़ोसी देशों नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, मालदीव तथा भूटान के साथ अपने मित्रतापूर्ण, व्यापक तथा रचनात्मक संबंधों को निरन्तर बढाने व घनिष्ठ करने की अपनी नीति को जारी रखा। उनका मानना था कि इन देशों के साथ नियमित विचार–विमर्श से आपसी संबंधों को और मजबूत करने तथा एक–दूसरे के हितों, अति संवेदनशील मुद्दों तथा सरोकारों का पारस्परिक मूल्याकंन करने में बल मिलता हैं। अटल जी के अनुसार हम मध्य एशिया , पश्चिम एशिया, खाड़ी के देशों तथा एशिया–प्रशान्त क्षेत्र के अपने विस्तारित पड़ौस के साथ संबंधों को और घनिष्ठ व व्यापक बनाते रहेंगें।

अटल जी ने पड़ोसी देशों के प्रति अपनी नीति स्पष्ट करते हुए कहा था कि –"भारत अपने सभी पड़ोसीयों के साथ अच्छे संबंधों का इच्छुक है और उनके साथ मिलकर अपनी समानताओं और समान आकांक्षाओं के आधार पर काम करना चाहता है।"[4] अटल जी ने पाकिस्तान के प्रति भी मित्रता की पहल की तथा 20 फरवरी 1999 को देश के विभिन्न क्षेत्रों के 22 प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ लाहौर की ऐतिहासिक यात्रा आरम्भ की। पाकिस्तानी टेलीविजन पर अटल जी ने कहा कि "मैं 21 वर्षों के बाद पाकिस्तान की जनता के लिए शान्ति और सद्भावनाएं लेकर आया हूँ।"[5] करगिल युद्ध के बाद अटल जी ने शांति प्रक्रिया शुरू करने के लिए आगरा शिखर वार्ता आयोजित की।

इस प्रकार अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री कार्यकाल के दौरान देश में और देश के बाहर ऐसी घटनाएं घटित हुई जिन्होंनें राजनीतिक कूटनीतियों और निर्णयों के अत्यधिक प्रभावित किया। ऐसे राजनीतिक उथल–पुथल और अन्तरराष्ट्रीय अस्थिरता के परिवेश में वाजपेयी जी में अदम्य साहस, प्रखर बुद्धिमता, दूर दृष्टि व कुशल नेतृत्व का परिचय दिया।

संयुक्त राष्ट्र संघ

अटल बिहारी वाजपेयी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका और इसकी प्रासंगिकता के संबंध में कहा था कि संयुक्त राष्ट्र संघ को इसके चार्टर द्वारा आने वाली पीढियों को युद्ध की विभीषिका से बचाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी परन्तु एक युद्ध विहीन विश्व सुनिश्चित करने में कठिनाइयाँ और खामियाँ रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ को राष्ट्रों के झगडों को रोकने अथवा उनको सुलझाने मे हमेशा सफलता हाथ नहीं लगी है। संयुक्त राष्ट्र संघ की 53 वीं महासभा के भाषण में अटल जी ने कहा कि हम उन देशों में से एक हैं, जिन्होनें लोकतंत्र को कायम रखा है, इसी आधार पर हम संयुक्त राष्ट्र संघ का भी लोकतंत्रीकरण चाहते हैं। एक अंतरराष्ट्रीय संस्था, जो बदलती हुई अंतरराष्ट्रीय वास्तविकताओं को न तो प्रतिबिम्बित करती है और न ही उनके अनुरूप बदलती है, निश्चित रूप से विश्वास खो देगी। इसलिए हम एक पुनर्गठित और प्रभावी संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन करते हैं, जो अपने अधिकांश सदस्य देशों की चिन्ताओं के प्रति पहले से अधिक जिम्मेदार हो और 21वीं सदी में हमारे समक्ष आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार हो। इसी भाषण में अटल जी ने सुरक्षा परिषद् के पुर्नगठन को लेकर अपनी मंशा जाहिर करते हुए कहा कि सुरक्षा परिषद् समसामयिक वास्तविकता का प्रतिनिधित्व नही करती, यह अंतरराष्ट्रीय संबंधों में लोकतंत्र का भी प्रतिनिधित्व नही करती। अटल जी ने कहा इसका एक ही समाधान है सुरक्षा परिषद् में नये सदस्यों को शामिल करना। विकासशील देशों को इसका स्थायी सदस्य बनाया जाना चाहिए साथ ही अन्य उपायों के साथ–साथ सुरक्षा परिषद् की अस्थायी सदस्यता का विस्तार किया जाना चाहिए ताकि यह वर्तमान एवं भावी चुनौतियों का सामना करने योग्य एक प्रभावी संगठन बन सके। इसी संम्बोधन में अटल जी ने स्थायी सदस्यता के लिए भारत की पुरजोर वकालत की। उन्होंनें कहा भारत स्थायी सदस्य के उतरदायित्व को निभाने के लिए तैयार है और इसके लिए पूर्ण रूप से सक्षम भी हैं।

आतंकवाद

अटल जी ने आतंकवाद को मानवता पर आक्रमण माना। उनका कहना था कि आतंकवाद एशिया तथा पूरे विश्व में शांति, सुरक्षा, लोकतंत्र तथा बहुधर्मी समाजो के लिए सबसे बड़े शत्रु के रूप में उभरा है। आतंकवाद एक ऐसा खतरा है, जो सभी को समान रूप से चुनौती दे रहा हैं। आतंकवाद के कारण विश्व भर में रोजाना मौते होती है। यह अंतरराष्ट्रीय अपराधों में से सर्वाधिक दुर्दम्य, व्यापक और जघन्य अपराध है और इससे समाज में पुरुषों और महिलाओं के जीवन तथा अंतरराष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा के लिए भारी खतरा है। उन्होंनें कहा कि भारत में हमें लगभग दो दशकों से आतंकवाद से जुझना पड़ रहा है, जिसे हमारे एक पड़ौसी देश द्वारा मदद देकर भड़काया जा रहा है। हमने इसका काफी सहनशीलता से सामना किया है, लेकिन इस चुनौती का मुँहतोड जवाब देने के लिए किसी को भी हमारी क्षमता पर सन्देह नहीं करना चाहिए। इसकी जडे विश्वभर में फैल चुकी हैं। आज नशीली दवाओं, हथियारों तथा धन के अवैध व्यापार से इसके संबंध हैं। संक्षेप में आतंकवाद आज विश्व स्तर पर खतरा बन चुका है, जिसका मुकाबला एक संगठित अंतरराष्ट्रीय का कार्रवाई से ही किया जा सकता है। इस प्रकार अटल जी ने अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद की जमकर आलोचना की। अटल जी ने प्रधानमंत्री रहते हुए आतंकवाद की कटु आलोचना ही नहीं की वरन् इसके समाधान हेतु विश्व स्तर पर त्वरित कार्यवाही करने पर भी जोर दिया। इस प्रकार अटल बिहारी वाजपेयी जी ने सभी वैश्विक मुद्दों पर स्पष्ट दृष्टिकोण अपनाया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राष्ट्रधर्म पत्रिका अंक– फरवरी 2019, पृ.सं.–58
2. सिंह, डॉ. संजय कुमार. भारतीय राजनीति के युग–टा श्री अटल बिहारी वाजपेयी, यश पब्लिकेशंस, दिल्ली, पृ.सं.–116
3. वही– पृ.सं.–117
4. वही– पृ.सं.–125
5. वही– पृ.सं.–128
6. घटाटे, ना.मा., अटल बिहारी वाजपेयी : गठबन्धन की राजनीतिज्ञ
7. दीक्षित, जे.एन., भारतीय विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2012
8. दुरदर्शन साक्षात्कार : 22 सितम्बर 2001

❖◆❖